जनतंत्र और भ्रष्टाचार

- आनन्द

देश के ज़्यादातर लोग भारत की वर्तमान राजनीति स्थिति को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। घोटाले के रूप में देश की पूंजीवादी राजनीति का पाप इसके अंग-अंग से फूट रहा है। देश की सभी राष्ट्रीय एवं स्थानीय पार्टियां जातिवाद, खानदान, साम्प्रदायिकतावाद, क्षेत्रवाद एवं भ्रष्टाचार के कीचड़ में मस्त होकर सुअरों की तरह लोट-पोट रही हैं। वे अपने-अपने सुअरबाड़े से थूथन निकाल-निकाल कर जनतंत्र की दुहाई देती हैं तब वे सुअर कम सियार ज़्यादा लगते हैं। सच कहे तो वे सुअर-सियार के सम्मिलत रूप हैं।

भारत के जनतंत्र की एक छोटी सी परीक्षा पिछले बीस-पचीस वर्षों से हो रही है। वह इसमें पूरी तरह असफल हो रहा है। देश में घोटाले पर घोटाले हो रहे हैं। 1989 तोप घोटाला हुआ था जिसके केन्द्र में राजीव गांधी थे। फ़िर 1992 में स्टॉक एक्सचेंज घोटाला हुआ, जिसके केन्द्र में हर्षद मेहता था। फ़िर एक से बढ़ कर एक घोटाले होने लगे। हाल फिलहाल में जब कोयला घोटाला हुआ तब प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कोयला मंत्री थे। सभी घोटालों में तमाम जांच-पड़ताल के बावजूद किसी व्यक्ति का गला नहीं पकड़ा गया। कौन इसके लिये जिम्मेदार है? इसकी तहकीकात नहीं हो पाई।

1989 में बोफर्स घोटाले में संयुक्त संसदीय कमेटी ने राजीव गांधी का बचाव किया था। पिछले दिनों सोनियां गांधी का दामाद ज़मीन घोटाले में 'बेदाग' निकल गया। 1992 में स्टॉक एक्सचेंज घोटाले में हर्षद मेहता का बचाव तत्कालिक वित्तमंत्री ने किया था। कोयला घोटाले की जांच के दौरान यह जग जाहीर हो गया कि सी.बी.आई.अपराधी का बचाव करती हैं। कहा जाता है कि भारत में संसद ही वह सर्वोच्च संस्था है जो किसी प्राधिकारी के गलत कामों पर निगरानी रखती है और उस पर रोक लगाती है। लेकिन संयुक्त संसदीय कमेटी, जो संसद का एक अंग होता है, किसी भी घोटाले में दोषी व्यक्ति को चिहिन्त करने में पूरी तरह असमर्थ रही है। इसकी असफलता संसद की ही असफलता है।

आज घोटाले में संसद, संयुक्त संसदीय कमेटी तथा सी.वी.आई को देखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि पूरी व्यवस्था गोपनीयता और चुप्पी के माध्यम से एक माफिया गिरोह की तरह काम करता है। जनतंत्र इस गिरोह का मात्र एक चोला है। यह कहना बेमानी होगा कि घोटलों में दोषी को सज़ा न देने की समस्या कांग्रेस की देन है। 1990 से लेकर आजतक सभी राजनीतिक पार्टियां सत्ता पर काबिज हुईं हैं। लेकिन हालत एक जैसी ही रही। इस हम्माम में सभी नंगे हैं। आज अगर घोटाले में लिप्त लोगों को चिंहित कर लिया जाय, तो सरकार के ज़्यादातर अधिकारी और ज़्यादातर राजनेता एवं मंत्री तथा प्रधानमंत्री भी जेल के अंदर होंगे।

भारत का जनतंत्र एक परीक्षा में पास होता है-चुनाव में। जनता एक सियार की जगह दूसरे सियार को चुन लेती है। जैसा कि अभी कुछ दिनों पहले कर्नाटक विधान सभा चुनाव में हुआ। यही कुछ 2014 के लोक सभा चुनाव में होने के आसार दिख रहे हैं। कर्नाटक में हारे सियार दिल्ली में अपनी ताजपोशी के लिये बेताब हैं।

कुछ दिनों पहले भ्रष्टाचार के मुद्दे पर श्री अन्ना हजारे के नेतृत्व में लोग सड़को पर कुछ समय के लिये आये। इस आंदोलन से कोई मशाल नहीं जल सकी। इस आंदोलन से देश की जनता में उम्मीद जगी थी, लेकिन कुछ नया नहीं हो सका। घोटाला जारी रहा। अभी तक जो घोटाले हुए हैं, किसी में मुख्यमंत्री शामिल हैं, किसी में प्रधामंत्री शामिल हैं किसी में मंत्री जी हैं तो किसी में राजनेता हैं। इन घोटालों में बड़े अधिकारियों के साथ-साथ बड़े-बड़े उद्योगपति और व्यापारी शामिल हैं। यह समुदाय हमारे देश का विशिष्टजन है। यह विशिष्ट जन उन नीतियों का पैरोकार है जिसके परिणामस्वरूप देश के करीब ढाई-तीन लाख किसानों ने आत्महत्या की है, करोड़ो की तादाद में शहरी एवं ग्रामीण मज़दूर नरक का जीवन यापन करते हैं, नौजवान बेरोजगारी का दंश झेलते रहे हैं, छात्र पढ़ने के लिये कर्ज की बोझ के नीचे दबे रहते हैं, छोटी बच्ची से लेकर बूढ़ी महिलाओं तक बलात्कार का शिकार होती हैं। लेकिन इस विशिष्ट-जन के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। यह इस देश का शासक है और पूरी तरह बबर्र है। इसका मंत्र है- समरथ को नहीं दोष गोसाईं।

इस विशिष्ट-जन का राजधर्म है अपनी-अपनी सम्पत्ति में बेहिसाब बढ़ोत्तरी करना। इसने पिछले दो दशकों में देश की जमीन, जंगल, खादान, नदी जैसी प्रकृतिक संसाधनों को अपने कब्जे में ले लिया है। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र के अद्योगों की सम्पत्ति निजी फायदे के लिये अपने नियंत्रण में लिया गया है। इसने देश के बेसहारा गरीब जनता को अपना निवाला बना लिया है। वह इनका खून पी कर जोंक की तरह मोटा हो रहा है। वह इस देश में जनतंत्र का नाम जपते हुए यह सबकुछ करता है। अगर घोटाला करने वाला बेदाग निकल जाता है और फिर मंत्री पद पर आसीन होता है तो इसमें आश्चर्य कैसा?

पिछले दो दशकों में एक ओर घोटाले का जोर रहा वही विशिष्ट-जन के राज्य ने ऐसी व्यवस्था की जिसमें देश के चंद लोगों की तिजोरी भरती रहे। यह देश भर में ऊपर से नीचे तक व्याप्त है। आज चोरी के खिलाड़, सिनेमा के कलाकार, धार्मिक सम्प्रदायों के गुरूघंटाल सभी बहती गंगा में हाथ धो रहे हैं। जबकि दिन-रात मेहनत करने वाला श्रमिक आज भी भूखों पेट सोता है, दर्द की गोली खा कर दिन भर काम करता है। देखते ही देखते देशभर में लूट, जालसाजी, कमीशनखोरी की एक व्यापक व्यवस्था कायम हो गई। शिक्षा, स्वास्थ जैसे सभी क्षेत्र इसके अभिन्न अंग बन गये। इसी व्यवस्था के अंतर्गत रियल इस्टेट, सट्टा बाजार, एम्बे जैसी कम्पनियों सहित अनेकों क्षेत्र में देश के मध्यम वर्ग का एक छोटा हिस्सा रातों-रात बंगला-गाड़ी का मालिक बन बैठा और इसके जीवन में मौज-मस्ती सुमार हो गई। इनकी दौलत इनकी मेहनत की कमाई नहीं है, इसलिए वे आज की नीतियों के पुरजोर समर्थक हैं। अपने स्वार्थ में आकंठ डूबा यह समुदाय, राजनेताओं, देशी-विदेशी कम्पनियों का शक्तिशाली फौज है। इसका उद्देश्य है उद्योगपतियों, नेताओं एवं अधिकारियों की लूट को बनाए रखना ताकि इस लूट का एक हिस्सा इसे भी मिलता रहे।

भ्रष्टाचार पूंजीवाद के गर्भ से ही पैदा होता है। कोई भी पूंजीवादी देश इससे कभी अछूता नहीं रहा। ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, जापान आदि तथा पूंजीवादी रास्ते पर चलने वाला रूस और चीन सभी इसके उदाहरण हैं। जिस समाज में पूंजीवाद का पलड़ा भारी होता है, वहां वह मनुष्य और समाज को व्यक्गित लोभ-लालच के बंधनों में जकड़ देता है। देश, राष्ट्र, मनुष्य सभी मंडी में खरीदे और बेचे जाने लगते हैं। इसमें भ्रष्टाचार सिर्फ एक माध्यम होता है।

भारत में यही हो रहा है। 1990 से ही भारत विश्व पूंजीवाद का एक अभिन्न हिस्सा बनता गया है। तब से वह एक सम्प्रभुता सम्पन्न देश के रूप में कमजोर होता गया है और एक मंडी के रूप में उभरता गया है। यहां हर पूंजीपति चाहे

वह देशी हो या विदेशी अपनी पूंजी का विस्तार करना चाहता है। पूंजी विस्तार के साधन में मज़दूरों के शोषण के अलावा राजनेताओं एवं सरकार के शीर्ष मन्त्रियों एवं अधिकारियों को रिश्वत देकर देश की प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण कायम करना भी शामिल है। 1990-91 में भारतीय पूजीवाद न साम्राज्यवाद के साथ शादी रचाई थी, जिससे देश में अनेक दानव पैदा हुए। इन्ही दानवों में एक बलात्कार का दानव है, एक भ्रष्टाचार का दानव है। इन्हें किसी कानून के जंजीड़ों से जकड़ना सम्भव नहीं है। क्योंकि भ्रष्टाचार को जंजीड़ों से जकड़ने का अर्थ है पूंजी की देवी को जंजीड़ों में जकड़ देना। भारत एक पूंजीवादी देश है जहां पूंजी की देवी की आराधना होती है।

आज गरीब लोग एवं उनके बुद्धिजीवी देश में आमूलचूल बदलाव चाहते हैं। जनपक्षधर बुद्धिजीवियों में बदलाव की तड़प उनकी लेखनी से जाहिर होता है। लेकिन यह प्रयाप्त नहीं है। इन्हें अपनी लेखनी के साथ गरीब जन के बीच उतरना होगा। देश में गरीब समुदाय एक अलग संगठित सामाजिक शक्ति के रूप में अपना अस्तित्व खो दिया है इसलिये वह बेहद कमजोर हालत में है। जनता भी जातिवाद, वंशवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकतावाद जैसे सामंती मूल्य-मान्यताओं से ग्रस्त है। इसलिये वह अपनी जाति, क्षेत्र, धर्म विशेष के नेताओं का पिछलग्गू बनकर चुनाव में शामिल होती है। यही कारण है क ऐसे चुनावों का जनतंत्र से कोई खास लेना-देना नहीं है। यह एक नकली जनतंत्र है। सामंती मूल्यों से ग्रसित व्यक्ति में आमतौर पर सामाजिक साहस का अभाव होता है। वह दूध को दूध और पानी को पानी कहने का साहस नहीं कर पाता।

आज भी सामंती मूल्य मान्यताएं भारतीय समाज में मजवूती से कायम है। इसी समाज से देश का नेता और अधिकारी पैदा होते हैं। वे अपने स्वार्थ के लिये इसे बनाए रखते हैं। आज जो लोग भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त करना चाहते हैं उन्हें पहले जातिवाद, क्षेत्रवाद, और सामंती मूल्यों एवं पूंजीवादी खुदगर्जी से अपने को मुक्त करना होगा। सबसे पहले इसकी शुरूआत जनपक्षधर बुद्धिजीवियों से ही हो सकती है। समर्पण, त्याग और कुर्वानी इसकी शर्त है। अगर यह नहीं है तो भ्रष्टाचार के खिलाफ़ नारे लगाना मात्र एक दिखावा ही होगा। जनपक्षधर बुद्धिजीवी अपने को इन बिमारियों से मुक्त करके ही गरीब जनता के बीच फैले उपरोक्त सामंती एवं पूंजीवादी विचारों के ख़िलाफ़ लड़कर एक नया समुदाय बना सकते हैं। यह समुदाय ही गरीब लोगों को एक अलग सामाजिक जन शक्ति के रूप में ढ़ल कर देश के सभी तरह के शोषकों के खिलाफ़ संघर्ष का सूत्रपात कर सकता है। इस संघर्ष से प्रज्वलित अग्नि में ही भ्रष्टाचार का दानव जल कर राख होगा और नया जनतांत्रिक भारत जन्म लेगा।

कुदरत के वरदान को शासकों ने बनाया अभिशाप

फ़रीदाबाद (म.मो.) देश भर में पानी के लिये त्राहि-त्राहि मची रहती है और जब कुदरत खुले हाथों से पानी देती है तो भी त्राहि-त्राहि मचती है। इस शहर में बेशक अभी त्राहे न मची हो परन्तु चन्द घंटों की बरसात ने शहरवासियों को मुसीबत में जरूर डाल दिया। तमाम सड़कें एक से दो फुट तक पानी में डूब गयीं। जहां सड़कों में गड्ढे हैं वहां तो पानी की गहराई और भी अधिक होना स्वाभाविक है। इन्हीं गड्ढों व अन्य स्थानों पर अनेकों वाहन फ़ंस गये। इसके अलावा बीसियों स्थान ऐसे भी थे जहां सड़क अथवा इसके किनारे धंसने से छोटे व बड़े वाहन पूरी तरह से धंस गये।

शहर को सजाने-संवारने के नाम पर जवाहर लाल नेहरू के नाम से केन्द्र सरकार ने 800 करोड़ रुपये यहां भेज रखे हैं। इस रकम से सीवरेज, सड़क व झोंपड़पट्टियों का सुधार करके शहर को रहने लायक बनाना था। लेकिन इतनी भारी-भरकम रकम डकारने के बावजूद नगर निगम यहां कोई सुधार नहीं कर सका, बल्कि हालात दिन-ब-दिन बद से बदतर होते जा रहे हैं।

इसी 800 करोड़ में से बड़ी भारी रकम सीवरेज व जल निकासी के नाम पर खर्च की गयी थी। करीब 3 बरस हो गये खर्च किये हुए लेकिन आज तक उसका कहीं कोई लाभ नज़र नहीं आ रहा। क्योंकि यह काम जगह-जगह से या तो अधूरा है या तो इतना बेकार कि उसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। इसी सीवर का एक भाग जो सेक्टर 28 में पड़ता है वह पूरा ज़मीन में धंस गया। इसमें एक कार भी धंस गयी, लेकिन नगर निगम की सेहत पर कोई असर नहीं, उसने तो उस जगह की बेरीकेडिंग भी करने की जरूरत नहीं समझी।

राष्ट्रीय राजमार्ग से बीपीटीपी (नहर पार) की ओर जाने वाली सड़क, जिसके एक ओर सेक्टर 15 व दूसरी और सेक्टर 12 लगते हैं, पर गत 4-5 बरसों में करीब 5 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। इस सड़क पर जल भराव से निपटने के लिये दोनों ओर गहरी नालियां बना कर दावा किया गया था कि अब यहां जल-भराव नहीं होगा। इसके बावजूद जल भराव से राहत नहीं मिली। भारी भरकम रकम खर्चने के बावजूद भी सड़क खस्ता हाल है। जानकार बताते हैं कि अब फ़िर से इसी सड़क की बड़ी मुरम्मत के नाम पर फ़िर टेंडर छूटने वाला है।

शहर भर के जितने भी खुले नाले व सीवरेज हैं, सब की छंटाई-सफ़ाई बरसात से पहले पूरी करके उन्हें बरसाती पानी निकालने के नाम पर अच्छी खासी रकम खर्च की जाती है। लेकिन पहली बरसात ही यह घोषित कर देती है कि छंटाई-सफ़ाई के नाम पर जो रकम खर्च की गयी है वह सीधे-सीधे सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा डकार ली गयी है। एक बार नहीं हर साल यही कर्म लगातार दोहराया जा रहा है।

बरसाती पानी को ज़मीन में उतारने के लिये सरकार ने नियम बनाया है कि प्रत्येक 500 गज़ तथा इससे बड़ी कोठी वाला रेन-हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करेगा तभी उसका नक्शा आदि पास होगा। इस नियम का कितना पालन हो रहा है, उसे तो छोड़ दीजिये, हां प्रमाणपत्र देने वाले कर्मचारी इसके नाम पर अच्छी खासी चांदी कुट रहे हैं। इस नियम के बदले यदि सरकार प्रत्येक सेक्टर में बरसने वाले पानी के लिये रेन-हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करती तो सड़कें जल भराव से बचती तथा बरसाती पानी बर्बाद होने से बच सकता था। यह कोई कठिन काम नहीं। प्रत्येक सेक्टर में दर्जनों छोटे-बड़े पार्कों को इस काम के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन यह केवल तभी संभव हो सकता है जब काम करने वाले अधिकारियों की नीयत ठीक हो और काम करने का सलीका हो।

लेकिन यहां तो नीचे से लेकर ऊपर तक सभी अधिकारियों व राजनेताओं का एक सूत्री कार्यक्रम लूटना और डकारना है, जनता जाये भाड़ में, डूबती है तो डूबे, मरती है तो मरे।